वर्धमान से महावीर

ओम: भगवान महावीर का जन्म कहाँ हुआ था? क्या आपको मालूम है?

संतन: कुंडलपुर में।

ओम: नहीं भाई, भगवान महावीर का जन्म कुंडलपुर में थोडी न हुआ था। कुंडलपुर में जन्म लेने वाले तो बालक वर्धमान थे। भगवान जन्मते नहीं, बल्कि आत्मा के पुरुषार्थ के बल पर भगवान बनते हैं। कुंडलपुर में जन्म लेने वाले बालक वर्धमान ही आगे जाकर भगवान महावीर हुए।

संतन: हाँ.. हाँ.. याद आया। मैंने बचपन में सुना था कि जब वर्धमान छोटे बालक थे, तब अपने दोस्तों के साथ खेल रहे थे। खेल के बीच में ही वहाँ भयानक सांप आ गया। सभी बच्चे डरकर भाग गये, परन्तु वर्धमान डरे नहीं। उन्होंने सांप को पकडकर वहाँ से दूर कर दिया। तब से लेकर वर्धमान वीर के नाम से जाने जाने लगे।

क्रिश: हाँ, मैंने भी सुना है। जब वे जवान थे तब राज्य में एक हाथी पागल हो गया था। कोई भी व्यक्ति उस पागल हाथी पर अंकुश नहीं रख पा रहा था। सभी लोग डर गये थे। परन्तु वीर डरे नहीं। उन्होंने पागल हाथी को अपने वश में कर दिया। तब से लेकर वे महावीर के नाम से जाने जाते हैं।

ओम: अरे भाई! यह मान्यता अज्ञानीजनों के कल्पनालोक की ही कहानी है। सांप या पागल हाथी से नहीं डरने के कारण कोई वीर या महावीर हो जाते तो मदारी या महावत को भी वीर या महावीर कहना चाहिए।

संतन+क्रिश: हमें तो आज तक इन बातों की तो हमें खबर ही नहीं थी।

संतन: अब तो आप ही बालक वर्धमान से भगवान महावीर की यात्रा का राझ बता दिजीए।

ओम: आपने अहंकार छोडकर सत्य को जानने की जिज्ञासा जताई है। इसलिए आपको अवश्य ही सत्य का परिचय होगा। सुनो, महावीराष्टक स्तोत्र में लिखा है कि जब आत्मा में काम विकार उत्पन्न होता है, तब

अच्छे-अच्छे लोग भी काम के सामने नाकाम हो जाते हैं। राजकुमार वर्धमान की तो बात ही कुछ ओर थी। उन्होंने ३० वर्ष की जवानी में कामविकार के सामने विजय पाकर मुनिधर्म अंगीकार किया था।

संतन: अच्छा। तो उन्होंने राग-द्वेष को जीता था।

ओम: हाँ, उन्हों दूसरों में परिवर्तन नहीं किया, बल्कि अपने में परिवर्तन किया। सुबह धूमने के लिए निकले हो और रास्ते पर एक लाख रुपये पडे हो, तो उसे उठा लेना आत्मा का पुरुषार्थ नहीं है, बल्कि पराये धन को उठाने का भाव छोडना आत्मा का पुरुषार्थ है।

क्रिश: सही कहा।

ओम: किसी पराई सुन्दर स्त्री को देखकर उसके प्रति बूरा भाव आता है, उसमें आत्मा की महानता नहीं है, बल्कि इस विकार को आत्मा के पुरुषार्थ के बल पर दूर करना आत्मा की महानता है।

संतन: यह भी बताईए कि भगवान महावीर को सारी दुनिया जानती है, इसलिए वे महान है या महावीर भगवान केवलज्ञान में सारी दुनिया को जानते है?

ओम: मैं आत्मा सारे जगत को जान लूं या सारा जगत मुझे जान लें, इसमें आत्मा की महानता नहीं है। भगवान महावीर ने निज आत्मा को जाना, पहिचाना और आत्मा में ही लीन हो गये, इसलिए वे वर्धमान से महावीर हुए।

क्रिश: उसके लिए बहूत मेहनत करनी पडती होगी?

ओम: मखमल जैसे मुलायम गालीचे से नीचे जिन्होंने पैर भी नीचे नहीं रखते, ऐसे राजकुमार भी दीक्षा लेकर मुनि होते है और अपूर्व पुरुषार्थ के बल पर वन में भी सुख का अनुभव करते हैं। राजकुमार वर्धमान ने संसार के भोगों को असार जाना और नित्य आत्मा को महान जाना। आत्मा के ज्ञान और ध्यान के बल पर वन के कांटे में भी अतीन्द्रिय सुख का रसपान किया।

संतन: तो क्या वे दीक्षा लेकर तुरन्त ही भगवान हो गये?

ओम: नहीं। बारह साल के अडिग तपश्चर्या करके इस तपश्चर्या के

दौरान वे हर ४८ मिनिट के अंदर ही आत्मा के निर्विकल्प ध्यान में लीन होते थे।

क्रिश: तो फिर वे भगवान कब बने?

ओम: ४२ वर्ष की आयु में शुक्लध्यान के बल पर उन्हें केवलज्ञान की प्राप्ति हुई थी। तब स्वर्ग के देवों ने समवसरण की रचना की थी। वहाँ तीर्थंकर भगवान महावीर ने जगत के भव्य जीवों को धर्म का उपदेश दिया। भगवान की वाणी सुनने के लिए सिर्फ मनुष्य ही नहीं, बल्कि स्वर्ग के देव भी यहाँ आये थे। यहाँतक कि पशु-पक्षी भी भगवान की वाणी को ध्यान से सुनते थे। महावीर भगवान ओमकार ध्वनि में उपदेश देते थे। तीर्थंकर भगवान की ओमकार ध्वनि १८ महाभाषाओं और ७०० लधुभाषाओं में विभाजित होती थी।

संतन: तो क्या पशु-पक्षी भी भगवान की सुनते थे?

ओम: हाँ, क्यों नहीं? वे भी आत्मा ही तो है। भगवान महावीर ने आत्मा से परमात्मा, नर से नारायण और जीव से शिव होने के साथ-साथ पशु से परमेश्वर होने का मार्ग भी बताया है।

क्रिश: तो क्या भगवान सभी को मोक्ष भेजते हैं?

ओम: नहीं, भगवान किसी को मोक्ष नहीं भेजते। यदि भगवान किसी को मोक्ष भेज सकते, तो केवलज्ञान होने के बाद भी ३० साल तक महावीर भगवान का स्वयं का ही मोक्ष क्यों नहीं हुआ?

संतन: उन्हें उपदेश देने इच्छा हुई, इसलिए ३० साल तक यहाँ रुके।

ओम: अरे भाई! जब तक इच्छा होती है, तब तक केवलज्ञान होता ही नहीं है। जब मोक्ष की इच्छा भी छूट जाती है, तब आत्मा का मोक्ष होता है।

क्रिश: भगवान ने कितना अच्छा मार्ग बनाया है मोक्ष का?

ओम: नहीं, भगवान मोक्ष का मार्ग बनाते नहीं। वे तो सिर्फ मोक्ष का मार्ग बताते हैं। सूर्य कभी मार्ग बनाता नहीं, वह तो सिर्फ मार्ग पर प्रकार डालता है। मार्ग को प्रकाशित करता है।

संतन: यह बात तो हम पहले से ही जानते थे कि दया-दान करने से मोक्ष

की प्राप्ति होती है, तो महावीर भगवान ने नया क्या बताया?

ओम: देखो, दया-दान करने से मोक्ष नहीं, बल्कि स्वर्ग की प्राप्ति होती है। जब जीव अपनी आत्मा के ध्यान में लीन होता है, तभी उसे मोक्ष की प्राप्ति होती है।

क्रिश: अच्छा, इसलिए भगवान महावीर की मूर्ति या चित्र में ध्यान की मुद्रा ही होती है। मगर एक बात तो है, जो आपको भी माननी पडेगी। महावीर भगवान का अलग था और अब काल अलग है। भगवान महावीर का अहिंसा परमो धर्म का उपदेश आउट ओफ डेट हो गया है।

ओम: महावीर भगवान के जमाने में लोग लाठियों से लडते थे, जिसके कारण लोग सिर्फ घायल ही होते थे। यदि कोई व्यक्ति घायल होता है, तो अस्पताल तक ही जाता है। बीच में ऐसा भी काल आया कि लोग तलवार से लडाई लडते थे। तलवार से लडेंगे तो अस्पताल नहीं, स्मशान ही जाना होगा।

क्रिश: हिंसा की तो बात ही क्या करना?

ओम: आज तो ऐसा जमाना आया है कि यदि अमेरिका चाहे तो ७१ बार दुनिया का नाश कर सकता है। रुस चाहे तो ४० बार दुनिया का नाश कर सकता है। सारी दुनिया को नाश करने काम एकाद बार तो भारत भी कर सकता है। परन्तु ये मनुष्य की बुद्धि का विकास नहीं, बल्कि विनाश ही है। आज के युग में महावीर भगवान द्वारा बताये गये अहिंसा धर्म की जितनी आवश्यकता है, उतनी महावीर भगवान के जमाने में भी नहीं थी। इसलिए महावीर भगवान का उपदेश आउट ओफ डेट नहीं बल्कि आज भी अप टु डेट है।

संतन: दुनिया में जो लोग हिंसा फैला रहे है, उन पापियों को अवश्य सजा देनी चाहिए।

ओम: सजा देने वाले आप और हम कौन होते है? भगवान ने तो मरने वालें और मारने वालें दोनों पर समभाव रखने का उपदेश दिया है। महावीर भगवान का प्रमुख उपदेश था कि प्रत्येक आत्मा एक समान है, कोई छोटा या बडा नहीं होता।

क्रिश: क्यों छोटा-बडा नहीं होता? होता तो है। कोई लखपति है तो कोई करोडपति है। कोई छोटे मकान वाला है, तो कोई बडे मकान वाला। कोई गोरा है, तो कोई काला है।

ओम: धन, घर, रुप यह सब पलभर के लिए ही है। इसलिए इन भौतिक वस्तुओं के कारण किसी भी आत्मा में भेद नहीं मानना चाहिए।

संतन: मुझे तो यह समझ में नहीं आता कि भगवान ने किसी को धनवान और किसी को निर्धन क्यों बनाया?

ओम: तुम्हें पहले ही तो बताया कि भगवान जगत के कर्ता नहीं है। प्रत्येक जीव अपने-अपने कर्मो का फल भोगता है।

क्रिश: अच्छा यदि ऐसा है तो फिर भूखे और प्यासे तो तडपने दो। उन्हें अपने कर्मो का फल भोगने दो।

ओम: यह सत्य है कि जीव अपने कर्मो का फल भोगता है, परन्तु जिसके ह्रदय में करुणा नहीं होती, उन्हें तो धर्म प्राप्ति होना तो बहूत दूर, धर्म समझ में भी नहीं आ सकता। इसलिए भगवान ने हिंसक पदार्थो के त्याग का उपदेश दिया है।

क्रिश: मगर मैंने तो सुना है कि माँस खाने से ज्यादा ताकत आती है।

ओम: तुमने देखा नहीं, माँस खाने वाले वाघ और शेर वगैरे मांसाहारी प्राणी हांफते रहते हैं। वे खुद अपना बोझ नहीं ढो सकते। यदि हाथी का पैर भी शेर के उपर पडे तो हड्डी-पसली एक हो जाये। मशीन के पावर नाम भी होर्स पावर कहते हैं, लायन पावर नहीं या टाईगर पावर नहीं।

संतन: वो तो हम शाकाहारी कुल में जन्में हैं, इसलिए शाकाहार का पक्ष लेते हैं।

ओम: ऐसी बात नहीं है। ज्योर्ज बर्नाड शॉ ने तो यहाँ तक कहा है कि मेरा पेट मरे हुए जानवरों का कब्रस्तान नहीं है। सारा जगत आज यह समझ गया है कि स्वस्थ और धार्मिक जीवन जीने के लिए शाकाहार ही एक मात्र विकल्प है।

क्रिश: क्या और भी कोई विशेष सिद्धांत भगवान ने समझाया है?

ओम: हाँ, अनेकांत स्वरुप का सिद्धांत

क्रिश: वो क्या है?

ओम: बालक वर्धमान के मित्र सात मंझिल वाले वर्धमान के महल में जाकर पहली मंझिल पर बैठे त्रिशला माता से पूछते है कि वर्धमान कहाँ है? तो माता त्रिशला कहती है कि उपर है। जब मित्रों ने सातवीं मंझिल पर जाकर देखा तो वर्धमान के पिताजी राजा सिद्धार्थ को बैठा पाया। वर्धमान के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने उत्तर दिया कि वर्धमान नीचे है। जब एक-एक मंझिल पर देखते-देखते मित्र नीचे आ रहे थे कि उन्होंने चौथी मंझिल पर विचारों में लीन वर्धमान को देखा और कहा कि हम कब से तुम्हें खोज रहे थे। माता त्रिशला और पिता सिद्धार्थ दोनों ने विरोधी जवाब दिया कि जिसकी वजह से हम तुम्हें खोजते-खोजते थक गये। तब वर्धमान ने कहा कि वे दोनों अपनी-अपनी अपेक्षा सत्य ही है। माताजी की अपेक्षा मैं उपर हूँ और पिताजी की अपेक्षा नीचे हूँ। प्रत्येक वस्तु को अनेकांत द्रष्टि से देखने पर विरोध लगता नहीं।

क्रिश: वाह! क्या अद्‌भूत अनेकांतवाद का सिद्धांत है।

संतन: भगवान अपरिग्रही होने का भी उपदेश दिया है न?

ओम: हाँ, महावीर भगवान ने आत्मा में से ही अनंत सुख प्रकट किया जिसके कारण परिग्रह को एकत्रित करने की आवश्यकता ही नहीं पडी। जब बच्चा पैदा होता है, तब नग्न और निर्दोष होता है। महावीर भगवान ने नग्नता और निर्दोषता को अपने जीवन में अंगीकार किया और उपदेश भी ऐसा ही देखर अन्य जीवों सच्चे सुख का मार्ग दिखाया।

क्रिश: वो कैसे?

ओम: महावीर भगवान ने कहा कि किसी दूसरों के दुर्गुणों को दूर करना हमारे वश की बात नहीं। परन्तु प्रत्येक व्यक्ति इतना अवश्य कर सकता है कि कोई भी दुर्गुण अपने आत्मा में प्रवेश न करे।

संतन: हाँ, यह तो है। बाझार में चलने वाली नकली नोटों को हम रोक नहीं सकते। मगर इतना अवश्य कर सकते है कि वे नकली नोट हमारी जेब में न आ जाये।

(दो लोग मिलते हैं और आपस में कहते हैं कि आपको दीपावली मुबारक

हों।)

ओम: आपने दीपावली की बधाई तो दे दी, पर आपको मालूम है कि दीपावली के दिन क्या हुआ था?

क्रिश: मालूम है, राम १४ वर्ष के वनवास के बाद अयोध्या वापिस लौटे थे।

ओम: और?

क्रिश: और क्या?

ओम: भगवान महावीर का ७२ वर्ष की आयु में दीपावली के दिन ही मोक्ष हुआ था।

संतन: हम धन तेरस और काली चौदस भी मनाते हैं। तो क्या इसका भी कोई विशेष महत्त्व है?

ओम: हाँ, क्यों नहीं। महावीर भगवान का अन्तिम उपदेश हमें धन तेरस के दिन ही तो प्राप्त हुआ था। तब लोग कहते थे कि धन्य है यह तेरस का दिन, जब भगवान महावीर ने अन्तिम उपदेश दिया। ये धन तेरस नहीं, बल्कि धन्य तेरस है।

क्रिश: और काली चौदस?

ओम: अज्ञान को अंधकार और ज्ञान को प्रकाश की उपमा दी गई है। भगवान की वाणी प्राप्त नहीं होने के कारण इस भारतभूमि पर अज्ञान का कालाघना अंधकार छा गया। इसलिए उस दिन को काली चौदस के नाम से जानते है।

संतन: मैंने सुना है, इसे रुप चौदस भी कहते है?

ओम: हाँ, यह भी सही है। इस दिन भगवान महावीर ने उपदेश तो नहीं दिया था, परन्तु भगवान के रुप का दर्शन अवश्य हुआ था। इसलिए यह दिन रुप चतुर्दशी के नाम से जाना जाता है।

क्रिश: हमें दीपावली मीठाईयां बांटकर नहीं मनानी चाहिए?

ओम: गौतमस्वामी ने जैसे दीपावली मनाई थी, हमें भी ऐसे ही दीपावली मनाने का प्रयास करना चाहिए।

क्रिश: गौतमस्वामी ने कैसे दीपावली मनाई थी?

ओम: जिस दिन महावीर भगवान का मोक्ष हुआ, उसी दिन शाम को गौतमस्वामी ने आत्मा के अपूर्व पुरुषार्थ के बल पर केवलज्ञान प्रकट किया था। जैसे एक जलते हुए दीपक से दूसरा दीपक भी जलता है, ऐसे ही भगवान महावीर के ज्ञानरुपी दीपक के समीप रहकर गौतमस्वामी का ज्ञान का दीपक भी प्रज्ज्वलित हो उठा।

क्रिश: हम तो सिर्फ घर के दरवाजे पर महावीर भगवान और गौतमस्वामी के ज्ञान के प्रतीक दो दीपक जलाकर रख देते हैं।

ओम: सच तो यह है कि हमारा आत्मा भी भगवान महावीर और गौतमस्वामी जलते हुए केवलज्ञान के दीपक के संपर्क में रहकर अपने ज्ञान का दीपक भी प्रकटाये, तभी असली दीपावली मनाई जायेंगी।

संतन: अच्छा, यह बताईए, महावीर भगवान का असली वारिस कौन है?

ओम: यह जानने से पहले इतना अवश्य जान लेना चाहिए कि महावीर भगवान की असली संपत्ति क्या थी?

क्रिश: वैशाली का राजमहल या पावापुरी का जलमन्दिर?

ओम: नहीं, इन में से कुछ भी नहीं

क्रिश: तो फिर?

ओम: भगवान महावीर ने हमें आत्मा में से परमात्मा होने का उपदेश दिया। तीर्थंकर भगवान महावीर के द्वारा सुबह २ घण्टे २४ मिनट, दोपहर में २ घण्टे २४ मिनट और शाम को २ घण्टे २४ मिनट, इसप्रकार प्रतिदिन ७ धण्टे और १२ मिनट दिव्यध्वनि के माध्यम से उपदेश प्राप्त होता था। उनके द्वारा दिया हुआ तत्त्वज्ञान ही भगवान महावीर की असली संपत्ति है। जो जीव उनकी वाणी को अपने जीवन में अपनाता है, वही महावीर भगवान का असली वारिस है।